चाइल्ड फ्रेन्डली स्कूल इनीशियेटिव | स्कूली संस्कृति पर स्थायी प्रभाव

रुद्रेश एस.

गुणवत्तापूर्ण सार्वजनिक शिक्षा भारत के विकास के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण है, ख़ासतौर पर इस व़क्त जबकि देश द्रुत गति से आर्थिक, प्रौद्योगिकीय और सामाजिक बदलावों से गुज़र रहा है। सार्वजनिक शिक्षा अत्यावश्यक है ख़ासतौर पर उस स्थिति में जबकि कमज़ोर और वंचित परिवारों के बच्चे मुख्यतः सरकारी स्कूलों में ही पढ़ते हैं। हर बच्चे को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना सरकार की संवैधानिक बाध्यता है। कुछ निश्चित स्कूली प्रथाओं की संस्कृति को विकसित करना और उसे बनाए रखना दीर्घकाल में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकता है, भले ही पढ़ाने वाली फैकल्टी और प्रशासन में बदलाव होते रहें।

एक टिकाऊ स्कूली संस्कृति बनाना ऐसे परिवेश को विकसित करने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता होती है जहाँ विद्यार्थी अकादमिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से फल-फूल सकें। यह लेख एक टिकाऊ स्कूली संस्कृति में योगदान देने वाली ऐसी आवश्यक स्कूली प्रथाओं की पड़ताल करता है जो सीखने को सम्भव बनाने वाले वातावरण, सीखने की भयमुक्त व बाल-केन्द्रित प्रक्रियाओं, स्कूल-समुदाय के बीच मज़बूत रिश्तों और उच्च शिक्षा के लिए विद्यार्थियों को सहयोग देने पर केन्द्रित होती हैं। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के चाइल्ड फ्रेंडली स्कूल इनीशियेटिव के अन्तर्गत स्कूलों में रचनात्मक प्रथाएँ विकसित करने के प्रयास किए गए थे।

तालिका- 1 : चाइल्ड फ्रेन्डली स्कूल इनीशियेटिव के पाँच क्षेत्र।

क्रमांक	स्कूली प्रथाओं के क्षेत्र	उद्देश्य	विकास के सूचक
	सुरक्षित स्कूली वातावरण	बच्चों को स्कूल में दाख़िला लेने के लिए आकर्षित करना	पर्याप्त हवा और रोशनी वाली कक्षाएँ, एक सुचारू रूप से चालू लाइब्रेरी, खेलने की जगह, विद्यार्थियों की कैबिनेट, हरियाली, सार्थक स्कूली सभा, उपयोग योग्य व चालू शौचालय, स्कूल तक सुरक्षित रूप से पहुँचने वाली रोड इत्यादि।
	कक्षा का वातावरण	बच्चों को स्कूल में बनाए रखना और उनकी नियमित उपस्थिति को सुनिश्चित करना	विद्यार्थियों को सीखने के संसाधनों तक निशुल्क पहुँच प्रदान करना; उपयुक्त शैक्षिक प्रदर्शनों (educational displays) का उपयोग करना, बच्चों के कार्यों का प्रदर्शन, छोटी कक्षाओं में लर्निंग पंडाल[1] लगाना, बच्चों के लिए रनिंग ब्लैकबोर्ड, कक्षा में किसी भी तरह का शारीरिक दण्ड न देना आदि।
	सीखने–सिखाने की प्रक्रिया	विद्यार्थियों के सीखने को सुदृढ़ करना और उनके नैदानिक मूल्यांकनों (diagnostic assessments) के आधार पर सीखने की उनकी विविध ज़रूरतों को पूरा करना	सहपाठियों के साथ मिलकर सीखने, लाइब्रेरी और प्रयोगशाला के उपयोग को प्रोत्साहित करना; गतिविधि-आधारित, प्रोजेक्ट-आधारित और हाथ से करके सीखना; ठोस वस्तुओं और विद्यार्थियों के अनुभवों का उपयोग करते हुए पाठों को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से जोड़ना आदि।

	शिक्षक का विकास	विद्यार्थियों को उनकी सीखने की ज़रूरतों के मुताबिक़ सीखने में शामिल करना और विभिन्न तरह की शिक्षण-विधियों को अपनाना	शिक्षक निरन्तर पाठ योजनाएँ और सीखने के संसाधनों को तैयार करते रहते हैं, क्लस्टर-शेयरिंग बैठकों में शामिल होते हैं और चर्चा में योगदान देते हैं; एसएसए द्वारा संचालित वार्षिक कार्यशालाओं में शामिल होते हैं; मास्टर रिसोर्स पर्सन के रूप में काम करते हैं और आवश्यकता के मुताबिक़ स्कूल-स्तर/क्लस्टर-स्तर पर क्षमता निर्माण का काम करते हैं; अन्य शिक्षकों के साथ कक्षा की चुनौतियों की चर्चा करते हैं आदि।
	समुदाय व माता-पिता की भागीदारी	स्कूली संस्कृति को बनाए रखना और प्रथाओं को विकसित करना	नियमित अभिभावक-शिक्षक बैठक आयोजित करना, सुनिश्चित करना कि स्कूल विकास एवं निगरानी समिति (एसडीएमसी) में सभी सामाजिक समूहों के अभिभावक शामिल हों और 33% महिलाएँ हों; समुदाय, पंचायत व पूर्व विद्यार्थियों के लिए ऐसे मंच तैयार करना कि वे विशेष कार्यक्रमों जैसे कि अधिगम प्रदर्शनियों, स्कूल के वार्षिक दिवसों, नामांकन अभियानों और स्कूल विकास योजना व उसके क्रियान्वयन आदि में योगदान कर सकें व ज़िम्मेदारियाँ ले सकें।

चाइल्ड फ्रेन्डली स्कूल इनीशियेटिव यानी बच्चों के लिए मैत्रीपूर्ण स्कूल की पहल

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन का चाइल्ड-फ्रेन्डली स्कूल इनीशियेटिव 2005 से 2012 के बीच सुरपुर (कर्नाटक के यादगीर ज़िले का एक उपखण्ड) में लागू किया गया था। इस प्रयास का ध्यान मुख्य रूप से पाँच क्षेत्रों में स्कूली प्रथाओं को विकसित करने पर था : स्कूल का वातावरण, कक्षा का वातावरण, सीखने–सिखाने की प्रक्रिया, शिक्षकों का पेशेवर विकास और समुदाय की भागीदारी। शुरुआत में, इन क्षेत्रों में फैले विकास के 214 सूचकों का उपयोग किया गया था जिसे बाद में संशोधित करके 60 सूचक कर दिया गया, जिन्हें इस लेख के अन्त में दिया गया है।

छह से सात सालों तक चले इन प्रयासों के नतीजे में सुरपुर के स्कूलों में महत्त्वपूर्ण सकारात्मक बदलाव देखे गए जैसे नामांकनों में वृद्धि, बच्चों के स्कूल छोड़ने की दरों में कमी, विद्यार्थियों की स्कूल में बेहतर उपस्थिति और बेहतर अधिगम, और स्कूली स्तर के बाद भी शिक्षा को ज़ारी रखना। कई विद्यार्थियों ने जवाहर नवोदय विद्यालय और मोरारजी देसाई आवासीय स्कूल जैसे संस्थानों की प्रवेश परीक्षाओं को सफलतापूर्वक पास करके बड़ी संख्या में उनमें दाख़िले लिए।

हालाँकि चाइल्ड-फ्रेन्डली स्कूल इनीशियेटिव 2012-13 में समाप्त हो गया, लेकिन स्कूलों द्वारा ऊपर उल्लिखित पाँच क्षेत्रों में विकसित की गई प्रथाएँ आज 10 साल से ज़्यादा गुज़र जाने के बाद भी स्कूली संस्कृति का अभिन्न हिस्सा बनी हुई हैं। यह लेख विभिन्न स्कूलों में विकसित की गईं और बनाकर रखी गईं कुछ प्रथाओं और उनके दीर्घकालिक प्रभावों की पड़ताल करता है।

सीखने के सम्भव बनाने वाला वातावरण विद्यार्थियों की अकादमिक सफलता और व्यक्तिगत विकास के लिए एक बुनियादी ज़रूरत है। यह वातावरण अपने सही अर्थ में भौतिक स्थान से कहीं ज़्यादा कुछ होता है और यह विद्यार्थियों को एक भयमुक्त, सहभागी और आवश्यकताओं पर आधारित जुड़ाव के साथ सीखने का मौक़ा देता है। स्कूलों को ऐसे सहायक वातावरण को बढ़ावा देना चाहिए जहाँ विद्यार्थी यह महसूस कर सकें कि वे महत्त्वपूर्ण हैं। स्कूलों को बच्चों को सीखने की ऐसी वस्तुओं और अनुभवों की एक समृद्ध शृंखला मुहैया कराना चाहिए जो सीखने की विविध ज़रूरतों और रुचियों को पूरा कर सकें और जिज्ञासा व तार्किक चिन्तन को प्रोत्साहित कर सकें।

स्कूल में सीखने को सम्भव बनाने वाला वातावरण

केस स्टडी : प्रवास की समस्या का निदान

जुमालापुरा डोड्डा टांडा दूरदराज इलाक़े में स्थित एक गाँव है जो इसके लोगों के काम के सिलसिले में अन्यत्र प्रवास कर जाने के लिए जाना जाता है। बच्चे अपने माता-पिता के साथ पुणे, गोवा और बेंगलूरु प्रवास कर जाते थे, जिसकी वजह से स्कूल में उनकी उपस्थिति अनियमित रहती थी और आख़िरकार वे स्कूल छोड़ देते थे। वहाँ के स्कूल के प्रधान शिक्षक, अचप्पा गौड़ा और उनकी टीम ने रात के खाने और सुबह के नाश्ते के साथ स्कूल में विद्यार्थियों के रुकने के इन्तज़ाम कर दिए थे। बच्चों को स्कूल के मध्याह्न भोजन तथा अभिभावकों व शिक्षकों द्वारा किए गए व्यक्तिगत निवेश से सहारा मिल जाता था। शिक्षक बच्चों की देखभाल करने के लिए उनके साथ स्कूल में रहते थे।

इस पहल ने बच्चों की नियमित उपस्थिति को सुनिश्चित किया, जिसकी वजह से उनके सीखने के परिणामों में सुधार हुआ और पाँचवीं कक्षा के 50 फ़ीसदी बच्चों ने मोरारजी देसाई स्कूल में दाख़िले के लिए होने वाली प्रवेश परीक्षाओं को पास कर लिया और 12वीं कक्षा तक अपनी शिक्षा जारी रखी। इन सकारात्मक नतीजों ने अभिभावकों को शिक्षा के महत्त्व के प्रति आश्वस्त कर दिया। इसी का परिणाम है कि वर्तमान में नामांकन की संख्या लगभग 590 विद्यार्थियों तक पहुँच गई है, जिनमें से लगभग 470 विद्यार्थी नियमित रूप से स्कूल आते हैं हालाँकि वर्तमान में स्कूल में खाने और रहने की कोई सुविधा नहीं है।

केस स्टडी : भाषा के अवरोध को पार करना

गद्दादा नारायण टांडा एक बहुत छोटा-सा गाँव है, जहाँ प्रवास की दर बहुत ज़्यादा है। इस गाँव में भाषा का अवरोध सामने आता था क्योंकि बच्चों की घरेलू भाषा लम्बानी है लेकिन स्कूल में शिक्षा का माध्यम कन्नड़ा है। एक समर्पित शिक्षिका, काशीबाई, ने अभिभावकों के घर जाकर और यहाँ तक कि कई बार तो उनके खेतों में जाकर उन्हें अपने बच्चों को नियमित रूप से स्कूल भेजने के लिए राज़ी किया। उन्होंने विद्यार्थियों की भाषा सीखकर और बड़े बच्चों से छोटे बच्चों को मदद दिलवाकर भाषा के अवरोध को पार किया।

स्कूल ने ख़ुद से सीखने और साथियों से सीखने की संस्कृति को विकसित किया, जिसने विद्यार्थियों को शिक्षक की अनुपस्थिति में ख़ुद ही कक्षाओं को सम्हालने के क़ाबिल बना दिया। समूह कार्य और साथियों के साथ मिलकर सीखने की क्रियाविधियों ने बच्चों के सामाजिक कौशलों को बढ़ाया और सहयोग के माध्यम से उनकी समझ को गहरा किया। उन्होंने साथियों के सहयोग से समूहों में सीखना शुरू किया।

स्कूल बन्द होने के बाद खेल मैदान पर होमवर्क पूरा करना, ठोस वस्तुओं और गतिविधि-आधारित अधिगम का प्रयोग करना, वित्तीय साक्षरता के लिए विद्यार्थियों द्वारा प्रबन्धित बैंक चलाना, लाइब्रेरी व लर्निंग कॉर्नर तक पहुँच और उनका उपयोग; कक्षाओं में कला के विभिन्न रूपों, चित्रकारी और ओरीगामी के प्रदर्शनों जैसी सभी चीज़ों ने सीखने के परिणामों को हासिल करने और एक दशक बाद भी इस संस्कृति को बनाए रखने में मदद की है। भाग्यश्री, जो कि काशीबाई के स्थान पर आई हैं, ने सुनिश्चित किया है कि पहले शुरू हुई सभी प्रथाएँ यथावत जारी रहें, ख़ासतौर पर सामुदायिक सम्बन्ध से जुड़ी प्रथाएँ।

इन प्रथाओं ने सभी चरणों पर सीखने के परिणामों को हासिल करने में विद्यार्थियों की मदद की, और पाँचवीं कक्षा के तक़रीबन 80-85 प्रतिशत विद्यार्थी हर साल जवाहर नवोदय विद्यालय और मोरारजी देसाई स्कूलों की प्रवेश परीक्षाएँ पास कर जाते हैं। इन प्रथाओं की कल्पना करने, सहयोग के साथ इन्हें नियमित बनाने, सभी हितधारकों के बीच एक साझा समझ विकसित करने; विद्यार्थियों के सीखने के अर्थ में इन प्रथाओं के परिणामों को दर्शा पाने, और स्कूली पढ़ाई के बाद भी शिक्षा को जारी रखने को प्रोत्साहित करने जैसी बातों ने इन प्रथाओं का सांस्कृतिकरण करके एक दशक के बाद भी इनके जारी रहने को सम्भव बनाया। इस स्कूल के सभी पूर्व विद्यार्थियों ने बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की और उनमें से ज़्यादातर विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं।

सीखने–सिखाने की भयमुक्त/न डराने वाली प्रक्रिया

विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित महसूस करने और ख़ुद को अभिव्यक्त करने में आत्मविश्वास महसूस करने के लिए एक भयमुक्त, न डराने वाला वातावरण बनाना अत्यावश्यक है। इसमें एक ऐसी कक्षा संस्कृति का निर्माण करना शामिल है जहाँ ग़लतियों को सीखने के अवसरों के रूप में देखा जाता हो और सभी विद्यार्थी यह महसूस करते हों कि उन्हें सहयोग दिया जा रहा है। एक बाल-केन्द्रित शिक्षण-विधि बच्चों की व्यक्तिगत ज़रूरतों, रुचियों और क्षमताओं के मुताबिक़ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को यह समझते हुए गढ़ती है कि हर बच्चा अपने आप में अनोखा होता है और दूसरे से अलग ढंग से सीखता है। विद्यार्थियों को सवाल करने, जाँच-पड़ताल करने और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रेरित करने से उनकी जिज्ञासा प्रस्फुटित होती है।

गद्दादा नारायण टांडा स्कूल, जिसका कि वर्णन ऊपर किया गया है, में न डराने वाले वातावरण और एक बाल-केन्द्रित शिक्षण-विधि की अधिकांश विशेषताएँ हैं। यह स्कूल भाषा और सीखने से जुड़ी मुश्किलों के प्रति संवेदनशीलता रखने; हर बच्चे का उसकी अनूठी क्षमताओं के लिए सम्मान करने; बच्चों को उनके विचारों को अभिव्यक्त करने तथा सवाल पूछने की स्वतंत्रता देने; और मार्गदर्शन प्राप्त परियोजनाओं के माध्यम से चीज़ों की जाँच-पड़ताल करने वाली प्रथाओं का सांस्कृतिकरण करने में सफल रहा। ऐसे अन्य स्कूल हैं जिन्होंने ऐसी कई प्रथाएँ विकसित की हैं, जो बच्चों के लिए मैत्रीपूर्ण वातावरण बनाने और सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में बाल-केन्द्रित तरीक़ा अपनाने की तरफ़ ले जाती हैं।

केस स्टडी : विद्यार्थी नेतृत्व

लोअर प्राइमरी स्कूल, हुविनाहल्ली में एक शिक्षिका, नवनी, ने स्कूल कैबिनेट के निर्माण के माध्यम से विद्यार्थी नेतृत्व और ज़िम्मेदारी को बढ़ाने की एक नवाचारी पहल की। विद्यार्थी महत्त्वपूर्ण मंत्रालयों के लिए चुने गए जैसे प्रधानमंत्री, शिक्षा

मंत्री, स्वास्थ्य मंत्री, पर्यावरण मंत्री, और खेल व संस्कृति मंत्री, जो कि सरकारी तंत्र के लघु रूप को दर्शाता है। प्रधानमंत्री पूरे समन्वयन का निरीक्षण करता है; शिक्षा मंत्री अकादमिक प्रक्रियाओं और नियमित कक्षाओं पर ध्यान केन्द्रित करता है और लाइब्रेरी में मदद करता है, शिक्षकों की अनुपस्थिति में कक्षाओं को सम्हालता है और विद्यार्थियों को होमवर्क में मदद करता है; स्वास्थ्य मंत्री स्कूल परिसर में, मध्याह्न भोजन के दौरान सफ़ाई और स्वच्छता बनाए रखने के लिए ज़िम्मेदार होता है, साथ ही विद्यार्थियों के बीच स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का प्रसार करने के लिए भी ज़िम्मेदार होता है; पर्यावरण मंत्री बागवानी को विकसित करने, छुट्टियों के दौरान हरियाली को बनाए रखने और पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ज़िम्मेदार होता है; खेल एवं संस्कृति मंत्री खेल कार्यक्रमों, सांस्कृतिक गतिविधियों और विभिन्न पाठ्येत्तर गतिविधियों में प्रतिभा को आगे बढ़ाने के लिए ज़िम्मेदार होता है। हर मंत्री अपनी सम्बन्धित गतिविधियों को विद्यार्थियों के एक समूह के साथ काम करते हुए पूरा करता है। साप्ताहिक कैबिनेट बैठक और मासिक रिपोर्ट विद्यार्थियों की प्रस्तुति और अभिव्यक्तिकरण के कौशलों और आत्मविश्वास को विकसित करती हैं। स्कूल ने इन पहलों के माध्यम से अपने परिसर में हरियाली बनाकर रखी है, सीखने की सामग्री विकसित की है और स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा दिया है, और यह सब नियमित गतिविधियों और शिक्षक के समर्थन के द्वारा सम्भव होता है। इस कैबिनेट प्रथा को बनाए रखने के लिए हुविनाहल्ली स्कूल ने गतिविधियों का नियमितिकरण कर दिया है और इन्हें स्कूल की दिनचर्या का हिस्सा बना दिया है। हर एक मंत्री की एक भली-भाँति परिभाषित भूमिका है और विशिष्ट ज़िम्मेदारियाँ हैं, जिनकी शिक्षकों द्वारा निगरानी की जाती है और वे विद्यार्थियों की मदद भी करते हैं। काम की प्रगति, भविष्य की गतिविधियों की योजना बनाने और सामने आने वाली समस्याओं का निदान करने के लिए नियमित बैठक आयोजित की जाती हैं। इस प्रक्रिया को पिछले 10 सालों से निभाया जाता रहा है।

शिक्षण योजनाएँ और अकादमिक बैठक

शासकीय मॉडल प्राइमरी स्कूल, हुनासागी कैम्प में दो महत्त्वपूर्ण पहलों ने शैक्षिक अनुभव को बहुत ही सार्थक ढंग से बदल दिया है: विद्यार्थियों की ज़रूरतों के मुताबिक़ कक्षा में उनकी संलग्नता के लिए शिक्षकों द्वारा योजना बनाना और नियमित अकादमिक बैठक आयोजित करना। प्रधान शिक्षक, बासवनागौड़ा द्वारा शुरू की गई इन प्रथाओं ने सीखने व सिखाने की गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार किया है, जिससे विद्यार्थियों के नामांकन में इज़ाफ़ा हुआ है और कुल मिलाकर स्कूल का विकास बेहतर हुआ है।

इस बदलाव की आधारशिलाओं में से एक है कक्षा में विद्यार्थियों की संलग्नता के लिए शिक्षक का योजना बनाने का सुव्यवस्थित तरीक़ा। सभी शिक्षक विस्तृत पाठ योजनाएँ तैयार करते हैं और प्रधान शिक्षक से नियमित रूप से उनकी समीक्षा करवाते हैं। ये योजनाएँ उनके विद्यार्थियों की विशिष्ट ज़रूरतों को पूरा करने के लिए तैयार की जाती हैं और यह

चित्र-1: बच्चों के लिए मैत्रीपूर्ण स्कूली वातावरण सभी बच्चों के सीखने और उनके सर्वांगीण विकास को बढ़ावा देता है।

सुनिश्चित करती हैं कि हर एक पाठ प्रासंगिक, बच्चों को संलग्न रखने वाला और पाठ्यचर्या से मेल खाने वाला हो। इन योजनाओं को इनके क्रियान्वयन पर की जाने वाली समीक्षा व विचार-विमर्श के आधार पर संशोधित किया जाता है।

पाठों के इस वैयक्तिकृत नियोजन को सहारा देने के लिए स्कूल प्रधान शिक्षक के नेतृत्व में पाक्षिक अकादमिक बैठक आयोजित करता है। ये बैठक शिक्षकों को सर्वश्रेष्ठ प्रथाओं, नवाचारी शिक्षण-विधियों और सीखने की सामग्री के प्रभावी उपयोग को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं।

यह सहयोगपूर्ण वातावरण पेशेवर विकास और शिक्षण कार्यनीतियों की निरन्तर बेहतरी को बढ़ावा देता है। शिक्षक उनके सामने आने वाली विभिन्न मुश्किलों की आपस में चर्चा करते हैं, चाहे ये मुश्किलें अवधारणाओं से जुड़ी हों, विद्यार्थियों के जुड़ाव से सम्बन्धित हों या फिर कक्षा के प्रबन्धन से। ये बैठक विद्यार्थियों से सम्बन्धित मुद्दों जैसे उनके अनुपस्थित रहने, स्कूल छोड़ देने और अकादमिक प्रदर्शनों पर भी ध्यान केन्द्रित करती हैं। इससे स्कूल को अकादमिक व अन्य मुद्दों को सुलझाने के लिए लक्ष्य-आधारित प्रयास करने का अवसर मिलता है।

निष्कर्ष

एक टिकाऊ स्कूली संस्कृति का निर्माण करने के लिए ऐसे बहुरूपी तरीक़े की ज़रूरत होती है जो भौतिक वातावरण, संसाधन उपलब्धता, भावनात्मक सुरक्षा, वैयक्तिकृत अधिगम, शिक्षक के विकास और सामुदायिक जुड़ाव जैसे मुद्दों पर ध्यान देता हो। इन प्रथाओं को अपनाकर स्कूल ऐसे समृद्ध व सहयोगात्मक वातावरण का निर्माण कर सकते हैं जो विद्यार्थियों को उनकी पूरी क्षमता पर हासिल करने में सक्षम बनाएँ। यहाँ चर्चा में शामिल किए गए उदाहरणों में प्रधान शिक्षकों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, शिक्षकों ने एक टीम की तरह काम किया है और स्कूल-समुदाय सम्बन्ध को सोच-समझकर निर्मित किया गया है। इन सभी स्कूलों में कुछ ख़ास प्रथाओं की कल्पना सन्दर्भ में रखकर की जाती है, सभी हितधारकों के बीच एक साझा समझ बनाई जाती है, प्रक्रियाओं को तय किया जाता है, क्रियान्वयन और समीक्षा से जुड़ी कार्यविधियों को तय किया जाता है और अन्त में समुदाय, शिक्षक व विद्यार्थी इन प्रथाओं के परिणामों के मूल्य को समझते हैं और यह समझ उन्हें इन प्रथाओं को जारी रखने के लिए प्रेरित करती है।

चाइल्ड फ्रेन्डली स्कूल इनीशियेटिव कार्यक्रम में उपयोग किए जाने वाले विकास सूचकों की सम्पूर्ण सूची।

चाइल्ड फ्रेन्डली स्कूल इनीशियेटिव शोरापुर

स्कूल सुधार योजना बेसलाइन सितम्बर–नवम्बर, 2009

क्लस्टर का नाम :

स्कूल का नाम :

क्रमांक	पाक्षिक सूचक
F1	एसडीएमसी और समुदाय मध्याह्न भोजन में दिए जाने वाले खाने की गुणवत्ता का निरीक्षण करते हैं
F2	कक्षाएँ साफ़ और स्वच्छ हैं
F3	बच्चों द्वारा किए जाने वाले विभिन्न कार्य जैसे प्रोजेक्ट कार्यों, पेंटिंग और शिल्प-कार्यों को आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किया जाता है और लिखित सामग्री को नोटिस बोर्ड या दीवारों पर प्रदर्शित किया जाता है
F4	रिसोर्स कॉर्नर – बच्चों को आसानी से उपलब्ध किताबें, टीएलएम, उपकरण मुहैया कराए जाते हैं
F5	कक्षा में कोई बेंत दिखाई नहीं देती
F6	स्कूल के सभी हिस्से साफ़ और स्वच्छ रखे जाते हैं (कोई जाले नहीं, काग़ज़ के टुकड़े नहीं, खिड़कियों के बाहर प्लास्टिक के कप नहीं, इधर-उधर फेंका गया कचरा नहीं इत्यादि)
F7	स्कूल परिसर में सामान्य बुनियादी ढंग की हरियाली – बग़ीचा, पेड़-पौधे
F8	सभी बच्चों के लिए पीने का साफ़ पानी उपलब्ध कराया जाता है
F9	लड़कों व लड़कियों के लिए अलग-अलग, चालू और उपयोग किए जा सकने वाले शौचालय (जिनमें पानी की सुविधा है, मग्गे हैं, बारिश से बचने के लिए कवर है, कुंडी वाला और उपयोग किया जा सकने वाला दरवाज़ा है)
F10	रिकार्डों को सफ़ाई से व्यवस्थित किया जाता है और पहचानी हुई जगह पर रखा जाता है

F11	खेल के सामान सफ़ाई से व्यवस्थित किए जाते हैं और पहचानी हुई जगह पर रखे जाते हैं
F12	एक साफ़ और स्वच्छ किचन/खाना बनाने की जगह है
F13	मध्याह्न भोजन के लिए लगने वाले किराने के सामान को रखने के लिए पर्याप्त और अलग जगह है (यह जगह पढ़ने-पढ़ाने वाले हिस्से की क़ीमत पर नहीं होनी चाहिए)
F14	प्रधान शिक्षक समेत सभी शिक्षक समय पर आते हैं (स्कूल शुरू होने से पहले किसी भी समय)
F15	प्रधान शिक्षक समेत सभी शिक्षक समय पर चले जाते हैं (स्कूल का समय पूरा होने के बाद कभी भी)
F16	खेल के पीरियड के दौरान बच्चे शिक्षक के मार्गदर्शन में खेलते हैं
F17	स्कूल में नामांकित विद्यार्थियों की कुल संख्या दर्ज़ हो और मार्गदर्शी (गाइड) द्वारा उनकी गिनती हो
F18	स्कूल के स्थायी शिक्षकों की संख्या और उपस्थित शिक्षकों की संख्या दर्ज़ होती है
F19	लाइब्रेरी है और उसे बच्चे निरन्तर इस्तेमाल करते हैं
F20	फर्स्ट-एड किट उपलब्ध है और उपयोग किए जाने लायक है
	मासिक
M1	एसडीएमसी बैठक ज़रूरी कोरम (सदस्यों की वह न्यूनतम संख्या जिसके होने पर ही बैठक में निर्णय लिए जा सकें) के साथ नियमित रूप से आयोजित की जाती रही हैं
M2	एसडीएमसी बैठक के मिनट स्कूल से जुड़ी चर्चाओं (बच्चों का नामांकन, स्कूल में बने रहना, सीखना, स्कूल छोड़ देने वाले बच्चों के लिए रणनीतियाँ आदि) को दर्शाते हैं
M3	कक्षाओं में एक आकर्षक लर्निंग पंडाल है
M4	साप्ताहिक शिक्षक बैठकों की कार्यवाहियों को दर्ज़ किया जाता है और उन पर आगे कार्रवाई की जाती है
M5	प्रत्येक शिक्षक के पास हर विषय/इकाई के लिए एक स्पष्ट/अच्छी तरह तैयार पाठ योजना होती है
M6	प्रत्येक शिक्षक दिन की गतिविधियों/कार्यवाहियों के बारे में ज़रूरी बातें लिखने के लिए एक डायरी बनाते हैं
	त्रैमासिक
Q1	समुदाय ने कक्षा में योगदान किए हैं, जैसे कि शिक्षण/टीएलएम बनाने में या अन्य तरह से
Q2	स्कूल के अकादमिक और प्रबन्धन से जुड़े मुद्दों की चर्चा ग्राम पंचायत के सदस्यों के साथ नियमित अन्तराल पर की जाती है और इन चर्चाओं के रिकार्ड रखे जाते हैं
Q3	विद्यार्थियों के लिए हर एक कक्षा में सवाल पेटी उपलब्ध है
Q4	उच्च कक्षाओं के लिए साधनयुक्त प्रयोगशाला है
Q5	विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों की पहचान की गई है और इनकी सूची स्कूल में उपलब्ध है
Q6	विद्यार्थियों की कैबिनेट मौजूद है और सक्रिय है
Q7	स्कूल सुधार योजना (एसआईपी) में हुई प्रगति को दर्ज़ किया जाता है
Q8	तीन महीनों में किसी भी बच्चे ने स्कूल नहीं छोड़ा है

	वार्षिक
A1	एसडीएमसी सरकारी मानकों के मुताबिक़ गठित की गई है (महत्त्वपूर्ण सूचक : 9 निर्वाचित सदस्य, सब-के-सब अभिभावक)
A2	समुदाय ने पिछले साल के दौरान दान दिया है (आर्थिक/सामग्री/श्रम)
A3	अभिभावक मीटिंग मानकों के मुताबिक़ आयोजित की जाती हैं (साल में दो बार)
A4	कक्षा के भीतर बच्चों को धूप और बारिश से पर्याप्त सुरक्षा मिलती है (इसमें उचित छत, दरवाज़े, खिड़कियाँ आदि हैं)

A5	कक्षाओं के भीतर पर्याप्त रोशनी और उचित वायुसंचार है
A6	कक्षाओं में खुलकर बैठने और चलने-फिरने की पर्याप्त जगह है
A7	कक्षाओं में उचित और स्पष्ट ब्लैकबोर्ड है, जो बच्चों व शिक्षकों दोनों को दिखाई देता है
A8	पहली और दूसरी कक्षाओं के सभी बच्चों के लिए सुलभ रनिंग ब्लैकबोर्ड हैं
A9	कक्षाओं में सभी विषयों से जुड़े अलग-अलग दीवार लेखन और प्रदर्शन हैं
A10	स्कूल के चारों तरफ़ अहाता है जिसमें एक गेट है (यह अहाता एक बायो-फेंस या जैविक-बाड़ भी हो सकता है, लेकिन इसमें कोई अन्तराल नहीं होने चाहिए)
A11	दीवारों पर पुताई है और उनका अच्छी तरह रखरखाव किया जाता है
A12	हर 40 बच्चों के लिए कम-से-कम एक कक्षा है
A13	बच्चों के खेलने के लिए पर्याप्त आकार का खेल का मैदान है
A14	सालाना खेल मेला आयोजित किया जाता है
A15	बच्चों की विशेष प्रतिभाओं को पहचाना और दर्ज़ किया जाता है
A16	सांस्कृतिक कार्यक्रम (क्विज़/नाटक/कहानी सुनाना आदि) नियमित (वार्षिक/त्रैमासिक) रूप से आयोजित होते हैं
A17	स्कूल में प्रधान शिक्षक, शिक्षकों और एसडीएमसी की भूमिकाओं व ज़िम्मेदारियों की सूची सहजता से उपलब्ध है
A18	स्कूल सुधार योजना बनाई गई है और उपलब्ध है
A19	प्रधान शिक्षक व सम्बन्धित शिक्षकों के पास सभी कक्षाओं व विषयों के लिए योग्यताओं की पूरी सूची उपलब्ध है
A20	सभी कक्षाओं के लिए टाइम टेबल बनाया जाता है वह प्रधान शिक्षक के पास आसानी से उपलब्ध है
A21	सभी बच्चों को किताबें व यूनिफ़ार्म समय पर बाँट दी जाती हैं
A22	वार्षिक स्कूल दिवस कार्यक्रम हो चुका है
A23	वार्षिक सामूहिक कार्यक्रम जैसे मीट्रिक मेला आयोजित हो चुका है
A24	स्कूल की उपलब्धियों से जुड़े सभी रिकार्ड (KSQAO* और ऐसे ही अन्य) प्रमुखता से प्रदर्शित किए जाते हैं
A25	सभी शिक्षक पिछले साल अपनी नियत एसएसए ट्रेनिंग में शामिल हुए हैं
A26	शिक्षकों ने पिछले साल शोध/क्रियात्मक शोध कार्य किया है

**कर्नाटक स्कूल गुणवत्ता मूल्यांकन संगठन*

टिप्पणी :

[i] लर्निंग पंडाल में बच्चों के कामों को कक्षा के छप्पर से लटकाकर दिखाया जाता है, जैसा कि नली-कली कक्षा में होता है।

रुद्रेश एस. पिछले 20 सालों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन के साथ हैं और वर्तमान में कर्नाटक व पुडुचेरी राज्यों में फ़ाउंडेशन के कार्यों के प्रमुख हैं। शिक्षा के क्षेत्र में 15 सालों से काम करते हुए वह प्रारम्भिक भाषा एवं गणित शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न प्रयासों तथा कर्नाटक सरकार के शिक्षा विभाग की शिक्षकों के पेशेवर विकास सम्बन्धी पहलों से जुड़े रहे हैं। उनसे rudresh@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : भरत त्रिपाठी **पुनरीक्षण :** प्रतिका गुप्ता **कॉपी एडिटर :** शहनाज़